Indian J. Soc &.Pol. 1(2):63-64:2014 **ISSN :2348-0084**

गाँधी के दर्शन का महत्व एवम् उसकी उपादेयता

राजेश कुमार[1]

[1]एसोसियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बुद्ध पी जी कालेज कुशीनगर, उ0प्र0 भारत

पूर्वपीठिका

विद्यमान जगत में मानवीय मूल्यो की स्थापना के लिये सक्रिय विभूतियों में गाँधी का नाम सर्वोपरि है। उन्होनें न केवल भारतीय राष्ट्र के अभ्युदय का पथ प्रशस्त किया अपितु भारतीयों के साथ ही सम्पूर्ण विश्व में व्यवस्थित एवम् परतन्त्र मानव जाति के लिये मुक्ति का पथ उद्घाटित करने के साथ ही साथ जीवन को उच्चता प्रदान करने के लिये व्यवहारिक आदर्श भी प्रस्तुत किया। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के महानायक तथा शान्तिपूर्ण अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था के समर्थक गाँधी जी एक महान साधक एवम् कर्मयोगी थे। महात्मा गाँधी की सम्पूर्ण राजनीति सत्य और अहिंसा के आइने में अभासित है।

युगपुरूष महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। राष्ट्रीय सामाजिक और वैयक्तिक जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नही था। जिसपर उनके विचारो का प्रभाव न पड़ा हो। महात्मा गाँधी के वैचारिक यात्रा के दो प्रमुख अवलम्ब है– अहिंसा एवम् सत्याग्रह। एक साघन है तो दूसरा साघ्य। यही दोनो गाँधी दर्शन की आधार शिला है। सत्य और अहिंसा से शरीर बुद्धि और आत्मा की सभी शक्तियों का विकास होता है।(सम्पूर्ण गांधी वांगमय, पृ 135) ''सत्य सर्वोच्च नियम है तो अहिंसा सर्वोच्च कर्तव्य''।(पावर आफ नान वायलेंस, पृ 276)

महात्मा गाँधी अपने गुणो, मानवतावाद तथा शान्ति में विश्वास के कारण समस्त मानव जाति की आत्मा की वाणी कहलाये। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री एवम् गाँधी के अत्यन्त ही प्रिय पं0 जवाहरलाल नेहरू गाँधी जी को भारतीय की प्रतिमूर्ति मानते थे। पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार गाँधी ने हमे मनुष्यता का मूल्य एवम श्रम का गौरव सिखाया। पर्ल एस बक ने गाँधी का ''अन्तकरण की आवाज'' कहा है। आइन्स्टीन ने गाँधी के न रहने पर लिखा अस्थि–मज्जा का ऐसा पुतला कभी इस पृथ्वी पर भी था।(अलवर्ट आइंसटीन) स्वतन्त्र भारत को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर एक नयी पहचान दिलाने मे गाँधी की महती भूमिका रही है।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के पुरोधा के रूप में महात्मा गाँधी समस्त भारतीय, अहिंसक समाज एवम् सत्याग्रही के लिये परिपूर्ण अध्ययन सामग्री है। महात्मा गाँधी के उपर 'गीता' का भी गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। महात्मा गाँधी कर्म में विश्वास रखते थे। सत्य कर्म एवम् जन सेवा ही उनका सच्चा धर्म था। गाँधी जी ने धर्म को विवेक एवम् तर्क पर आधारित माना। जिसमें परम्पराओं, प्रथाओं, रूढ़ीयों के लिये दूर–दूर तक को स्थान नहीं है।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में गाँधी का असहयोग आन्दोलन 1920, सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930, भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 सदा के लिये अविस्मरणीय है। गाँधी के प्रति जनता की असीम श्रद्धा और अटूट विश्वास में आन्दोलन को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। ''भारत की आन्तरिक राजनीति में वह नरमपंथ एवम् चरमपंथ के बीच पथ संचालक थे।(मुखर्जी पृ 45)

यह उनके करूणामय व्यक्तित्व की विशालता का द्योतक है। महात्मा गाँधी की सम्मति में गीता ज्ञान बोध कराने के साथ ही सत्य और न्याय के रक्षा हिंसा का आश्रय लेने की शिक्षा भी देती है। शस्त्र का आश्रय निष्काम भाव से लिया जाना चाहिये। गाँधी जी आध्यात्म तथा अनुभूति, सत्य तथा जीवन में समन्वय करने के लिये सचेष्ट रहें। उन्होने चित्त और कर्म में अद्भूत समन्वय स्थापित किया है। गाँधी ने धार्मिक अवधारणाओं को नैतिक कर्म में परिवर्तित कर आज के औद्योगिक समाज को नई दिशा दी है।

तृतीय विश्व को गाँधी के प्रतिमान एवम् दर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है। गरीबी, निरक्षरता, शोषण, अंधविश्वास, धार्मिक और जातिगत युद्ध, अमानवीय व्यवहार इन सबका उत्तर गाँधी के जीवन दर्शन में मिलता है।

1: Corresponding Author

गाँधी का विचार है कि मानव का प्रकृति से, मानव का मानव से तथा मानव का अपने आप से अलगाव है। अलगाव की समस्या का उत्तर नैतिक मूल्यों के सृजन से मिल सकता है। आर्थिक विषमता का समाधान समानता में निहित है। समानता ट्रस्टीशिप की आधारशिला है गाँधी के जीवन दर्शन में आतंकवाद के लिये कोई स्थान नहीं है। वर्तमान दौर में भय और आतंक की राजनीति से मुक्ति तथा त्रस्त मानवता के त्राण के लिये रास्ता गाँधी के नीतियों से होकर जाता है। सत्याग्रही के रूप में यह सन्त ''मानव मन की विकृतियों से व्यक्तिगत जीवन में विरत रहने की साधना एवम् समाजिक–राजनीतिक स्तर पर उनके शमन की आजीवन चेष्टा करता रहा है।(त्रिपाठी, 1987 पृ 211)

सम्पूर्ण मानवता एवम् शान्ति के प्रति सन्नध अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिये गाँधी एक अद्भूत प्रतिमान है। गाँधी ने अपनी वाणी, व्यवहार, दर्शन और करूणा से सन्देशो से सम्पूर्ण मानवता को संकीर्णता के अंधकार से ज्ञान प्रगति के उन्मुक्ति के प्रकाश की ओर जाने का मार्ग प्रस्तुत किया।

आज राष्ट्रीय स्तर पर विषमताओं और जटीलताओं के निराकरण का उपाय यदि गाँधी दर्शन में है तो अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सद्भाव बनाये रखने का उपाय भी गाँधी दर्शन में ही है।

सन्दर्भ

सम्पूर्ण गाँधी वागंमय खण्ड 65

रिचर्ड ग्रे के साथ गाँधी की बातचीत, *'पावर आफ नान वायलेन्स'*

मुखर्जी, हिरेनः *गांधी ए स्टडी,*

त्रिपाठी, एस पी एमः *कण्टेम्परोरी पॉलिटिकल थाट,* राज पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2011